लखनऊ, मंगलवार
16 जून, 2026

नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 18+4=22

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

उन्नाव में साधु की हत्या का मुख्य आरोपित मुठभेड़ में ढेर 12

दोहा डायमंड लीग से वापसी करेंगे नीरज चोपड़ा 15

फेफड़ों का संक्रमण बिगाड़ सकता है व्यक्ति की चाल

कुमार संजय • जागरण

- माइकोप्लाज्मा निमोनिया के बाद दिमाग और नसों पर भी पड़ सकता है असर
- अध्ययन में सामने आए तथ्य समय पर उपचार से 83 प्रतिशत मरीज हुए ठीक

लखनऊ : आमतौर पर फेफड़ों के संक्रमण का कारण माना जाने वाला माइकोप्लाज्मा निमोनिया कुछ मामलों में दिमाग और तंत्रिका तंत्र को भी प्रभावित कर सकता है। इससे मरीज का चलने-फिरने में डगमगा सकता है। शरीर में अचानक झटके आ सकते हैं और आंखों की हरकतें भी असामान्य हो सकती हैं। समय रहते बीमारी की पहचान और सही इलाज मिलने पर अधिकांश मरीज पूरी तरह ठीक हो जाते हैं। यह नई जानकारी अंतरराष्ट्रीय शोधों की समीक्षा अध्ययन में सामने आयी है। इस समीक्षा अध्ययन को मूवमेंट डिश आर्डर क्लिनिकल प्रैक्टिस मेडिकल जर्नल ने स्वीकार किया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, शोधार्थियों ने दुनियाभर में हुए 42 मरीजों के मामलों का विश्लेषण किया। इनमें करीब 69 प्रतिशत मरीजों में दिमाग और नसों से जुड़ी परेशानी शुरू होने से पहले सर्दी, खांसी या फेफड़ों के संक्रमण के लक्षण मिले। सबसे अधिक मरीजों में सेरिबेलर एटैक्सिया पाया गया। इस स्थिति में व्यक्ति का संतुलन बिगड़ जाता है और चलने-फिरने में परेशानी होती है। 26 प्रतिशत मरीजों में आप्सोक्लोनस-मायोक्लोनस-एटैक्सिया सिंड्रोम पाया गया, जिसमें आंखें तेजी से अनियंत्रित रूप से घूमती हैं। शरीर में झटके आते हैं और चलने में दिक्कत होती है। अधिकतर मामलों में परेशानी सीधे संक्रमण से नहीं, बल्कि संक्रमण के बाद शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली की असामान्य प्रतिक्रिया के कारण होती है। कई मरीजों की जांच रिपोर्ट सामान्य मिली, जबकि कुछ में दिमाग के संतुलन नियंत्रित करने वाले हिस्से में बदलाव देखे गए। 36 प्रतिशत मरीजों का इलाज केवल एंटीबायोटिक दवाओं से किया गया, जबकि 45 प्रतिशत मरीजों को एंटीबायोटिक के साथ प्रतिरक्षा प्रणाली को नियंत्रित करने वाली दवाएं भी दी गईं। अध्ययन में पाया गया कि 83.4 प्रतिशत मरीज पूरी तरह या लगभग पूरी तरह स्वस्थ हो गए। संजय गांधी पीजीआइ के तंत्रिका तंत्र रोग विशेषज्ञ प्रो. विमल कुमार पालीवाल का कहना है कि इस तरह के मामले हमारे पास आते हैं। फेफड़ों के संक्रमण के बाद किसी व्यक्ति को अचानक चलने में लड़खड़ाहट, संतुलन बिगड़ने, शरीर में झटके आने या आंखों की असामान्य हरकत जैसी समस्याएं हों तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय पर इलाज से मरीज को बचाया जा सकता है।

36 प्रतिशत मरीजों का इलाज केवल एंटीबायोटिक दवाओं से किया गया

प्रमुख बातें

- 42 मरीजों के मामलों का किया गया विश्लेषण।
- 69 प्रतिशत मरीजों में पहले फेफड़ों का संक्रमण मिला।
- सबसे ज्यादा मामले सेरिबेलर एटैक्सिया के पाए गए।
- 83.4 प्रतिशत मरीज पूरी तरह या लगभग पूरी तरह स्वस्थ हुए।

इन्होंने किया अध्ययन

अध्ययन में किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय की तंत्रिका तंत्र विशेषज्ञ डा. श्वेता पांडेय, एम्स रायबरेली की प्रो. अमिता जैन, डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान की मेडिसिन विभाग की डा. ऋतु करौली, संजय गांधी पीजीआइ के तंत्रिका तंत्र विशेषज्ञ प्रो. विमल कुमार पालीवाल, एरा मेडिकल कालेज के तंत्रिका तंत्र विशेषज्ञ डा. रविंद्र कुमार गर्ग, टीएस मिश्रा मेडिकल कालेज के पल्मोनरी मेडिसिन के डा. संजय सिंघल शामिल रहे।